thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

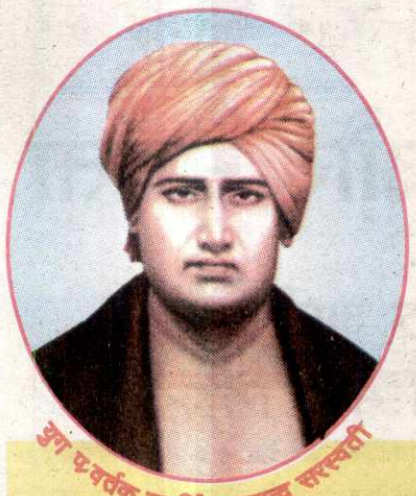

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 48 8 से 14 जनवरी, 2015 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 मा. कृ.-03

श्रद्धानन्द बलिदान समारोह एवं श्री धर्मपाल विद्यार्थी का जन्म दिवस समारोह

25 दिसम्बर को माथुर वैश्य भवन आगरा में भव्यता के साथ सम्पन्न

देश में नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या एवं धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध आर्य समाज प्रचण्ड अभियान चलायेगा – स्वामी आर्यवेश

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, आगरा एवं धर्मपाल विद्यार्थी ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में 25 दिसम्बर, 2014 को आगरा के माथुर वैश्य भवन में भव्य समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः यज्ञ से हुआ। इस विशेष यज्ञ के ब्रह्मा युवा संन्यासी स्वामी विश्वानन्द जी थे। इस विशेष यज्ञ में मुख्य यजमान के पद पर श्री सुशील विद्यार्थी सपत्नीक विराजमान थे। यज्ञ के उपरान्त सभागार में मुख्य कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला सभा के प्रधान डॉ. कुलदीप राय कपूर ने की। कार्यक्रम में सर्वश्री राम जी लाल सुमन पूर्व सांसद, श्री अतुल गुप्ता नेशनल चैम्बर ऑफ कामर्स, पूर्व विधायक अनुराग शुक्ला, श्रीमती सरोज गौरिहार स्वतन्त्रता सेनानी, स्वामी शिवानन्द तथा स्वामी विश्वानन्द जी आगरा चेन्ज के मालिक श्री रमाशंकर, समाज वादी पार्टी के आगरा अध्यक्ष श्री राम सहाय यादव, बी. जे. पी. के नगर अध्यक्ष प्रमोद गुप्ता मुख्य रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सेन्ट जॉन्स कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. श्री भगवान शर्मा ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान युवा हृदय सम्राट स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदानी इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना सर्वस्व आर्य समाज के लिए न्योछावर कर दिया। उन्होंने वैदिक संस्कृति को समुन्नत करने के लिए वेदाधारित गुरुकुलों की स्थापना की और मातृभाषा, मातृ संस्कृति और मातृभूमि की रक्षा के लिए कठिन परिश्रम किया। उन्होंने महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों पर चलते हुए नारी शिक्षा के लिए कई गुरुकुलों की स्थापना की। देश में बढ़ रहे धार्मिक पाखण्ड, नशाखोरी व कन्या भ्रूण हत्या तथा विभिन्न सामाजिक बुराईयों की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने आर्यजनों का आह्वान किया कि आप सबको संगठित होकर संघर्ष करना होगा। स्वामी जी ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या आज समाज की सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या बनी हुई है। असमान लिंग अनुपात की वजह से लड़कियों की लड़कों से कम होती संख्या बेहद चिंताजनक है।

उन्होंने कहा कि कन्याओं को माँ के पेट में ही मरवा देना ईश्वरीय नियम का उल्लंघन है जघन्य पाप तथा कानूनी अपराध भी है। अतः इस अपराध के विरुद्ध जबरदस्त आन्दोलन चलाया जायेगा। उन्होंने कहा कि आज युवाओं में बढ़ती नशाखोरी अत्यन्त चिन्ताजनक है तथा समाज के लिए एक बड़ा खतरा भी है। स्वामी जी ने युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने की मुहिम चलाने के साथ-साथ उनमें नैतिकता, ईमानदारी, समाज सेवा देश भक्ति तथा ईश्वर भक्ति के संस्कार देने पर बल दिया। स्वामी जी ने कहा कि सार्वदेशिक सभा पूरे देश में तेजस्वी युवा भारत अभियान चलायेगी तथा देश के युवाओं को वैदिक संस्कृति से ओत-प्रोत करेगी। स्वामी जी ने बताया कि आर्य समाज पूरे देश में नशाबन्दी आन्दोलन चलायेगा तथा केन्द्र सरकार से आग्रह करेगा कि शराब के सम्बन्ध में राष्ट्रीय नीति घोषित करे तथा पूरे देश में पूर्ण शराबन्दी लागू करे। स्वामी जी ने कहा कि आज भारत में नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति से देश की बहुत बड़ी हानि हो रही है। जितनी दुर्घटनाएं होती हैं तथा अन्य अनैतिक कार्यों में भी शराब ही मुख्य रूप से जिम्मेदार होती है। उन्होंने कहा कि शराब का सेवन करने से व्यक्ति की बुद्धि कार्य करना छोड़ देती है और वह निर्णय लेने में अक्षम हो जाता है। स्वामी जी ने कहा आर्य समाज पूरे देश में जन-जागरण अभियान चलायेगा तथा इस कार्य में अन्य संगठनों का भी सहयोग लिया जायेगा।

स्वामी जी ने धर्म के नाम पर पूरे देश में चल रहे पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को समय की सबसे बड़ी चुनौती बताते हुए कहा कि आज बड़े-बड़े कथित धर्मगुरु लोगों की धार्मिक भावनाओं का दोहन अगले पृष्ठ पर जारी है

आगामी महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम

- 11 जनवरी, 2015 को रोहतक में नारी सशक्तिकरण सम्मेलन का भव्य आयोजन
- 14 से 23 फरवरी, 2015 तक नशाखोरी, पाखण्ड व कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध पूरे हरियाणा में जनजागरण यात्रा निकाली जायेगी।
- 8 से 15 मार्च, 2015 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में विशाल नशामुक्ति तथा बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन
- अप्रैल में हरिद्वार से भोपाल तक वैदिक विरक्त मण्डल एवं सार्वदेशिक सभा की ओर से वेद प्रचार यात्रा निकाली जायेगी।
- एक लाख युवाओं से नैतिकता, ईमानदारी व आध्यात्मिकता को अपनाने तथा नशाखोरी जैसी बुराईयों से दूर रहने के लिए संकल्प पत्र भरवाये जायेंगे।
- नशाबन्दी समिति हरियाणा की 51 सदस्यीय समिति का गठन किया गया जिसका प्रधान स्वामी रामवेश जी को नियुक्त किया गया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

विश्व संगठन के वैदिक आधार मैत्री और समता

– स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है। डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त – ''योग्यतम की जीत''। योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वही संसार में टिकता है। उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी मछली का राज होता है। जंगल में शेर आदि निर्बल जानवरों को खाकर जंगल पर राज करते हैं। शेर जंगल का राजा कहा जाता है। यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है।

पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लग सकता है किन्तु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता। मनुष्य विवेकवान, विचारशील प्राणी है। मनुष्य के लिए उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा। मनुष्य अपने स्वभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है। सत्य परोपकार दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है – ''अश्रद्धा मनृत्येदधत् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।''

अर्थात् परमेश्वर ने संसार में असत्य, क्रूरता, दुष्टता इत्यादि को देखा और सत्य, करुणा, सज्जनता इत्यादि दोनों तरह के कार्यों को पाया। वेद का मन्त्र यह कहता है कि परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में सत्य, करुणा, दया आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य, आदि मानवीय गुण है और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार हैं।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्विन के सिद्धान्त ''योग्यतम की जीत'' के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरों का शोषण कर रहे हैं, अतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया। किन्तु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है। यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है। जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता।

यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आधार **''उपनिवेशवाद''** को बनाया। इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में अपने देशों के उपनिवेश बनाये। उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों में मिलजुल कर रहने की भावना का थोड़ा सा उदय हुआ। इसका सुफल निकला संसार के राष्ट्रों ने लीग ऑफ नेशन्स का गठन किया किन्तु इस राष्ट्र संघ का आधार मैत्री और समता नहीं था। इसका फल यह हुआ कुछ ही वर्षों में राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्वयुद्ध का दूसरा नरसंहार का, अत्यन्त हृदयविदीर्ण करने वाला हिरोशिमा, नागासाकी का एटम बम की विनाश लीला और हिटलर के गैस चेम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संसार में शांति बनी रहे इसके निमित्त ''संयुक्त राष्ट्र संघ'' (यू. एन. ओ) का संगठन किया। विश्वयुद्ध के कारणों का इतिहास कुछ अधिक सुस्पष्ट रूप से सामने था। अतः अधिक सूझ-बूझ, मैत्री और समता दिखाई पड़ती है। संयुक्त राष्ट्र संघ का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना। साधारण समिति, सुरक्षा परिषद्, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गई। यह सभी संगठन थोड़े अधिक मैत्री और समानता के आधार पर बने हैं किन्तु सब जगह कुछ राष्ट्रों की महिमा संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है। अमेरिका अपनी दादागिरी बनाये रखना चाहता है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, चीन का विशेषाधिकार वीटो संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डालर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है। संसार की अन्य मुद्रायें, रुपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं है। विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनिमय दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं। जबकि विनिमय का आधार ''क्रय शक्ति की समानता''। (पर्चेजिंग पावर पैरिटी) होना चाहिए। यह असमानता की भावना और सुरक्षा परिषद् आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलताएँ हैं। ये निर्बलताएँ विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती हैं। वैदिक आदर्शों के आधार पर समानता और सबका कल्याण, सारे विश्व का कल्याण काम्य है –

''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्चन्तु, मा कश्चिद् दुखःभाग् भवेत्॥''

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतंत्र का बहुमत नहीं था। वहाँ ऋषि सर्वसुख, सर्वकल्याण की भावना को प्रश्रय देते हैं।

वेद की दृष्टि में भूतमात्र से, प्राणिमात्र से मित्रता की कामना की गयी है –

''मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥''

अर्थात् हम प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणी मात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें।

इस वैदिक सूत्र में केवल मनुष्य के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझा गया है। पशु-पक्षी संसार के सभी जीव-जन्तुओं को मैत्री की भावना से देखने की कामना है। यही मैत्री की भावना सभी राष्ट्रों में व्याप्त संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व संगठनों का आधार बने।

संसार के राष्ट्रों के संगठन का आधार राष्ट्रों में समता की भावना है। यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानताहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणा :- वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया है – **''ऋग्वेद का मण्डल मणि सूत्र।''** ऋग्वेद में दस मण्डल हैं। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला मिलती है। यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व शासन और विश्व नागरिक की अवधारणा को पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्ट्रों में समानता है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का तीसरा मन्त्र विशेष रूप से समानता का उद्घोष करता है –

''ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी,
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः।
सामनेन वो हविषा जुहोमि॥''

मन्त्र का संक्षेप में भाव यह है कि सभी राष्ट्रों में समान विचार हो और संगठन की समितियों में समानता हो। सबके मन व चित्त में समानता हो। सभी राष्ट्रों में चिन्तन और विचार की समानता हो और सारे राष्ट्रों का प्राप्तव्य समानता के आधार पर हो। यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है।

– सम्पर्क – ईशावास्यम्, पी.-30, कालिन्दी हाऊसिंग एस्टेट, कोलकाता-700089
मो.:-09432301602

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं कर्मठ आर्य नेता ब्र. राजसिंह आर्य जी का आकस्मिक निधन

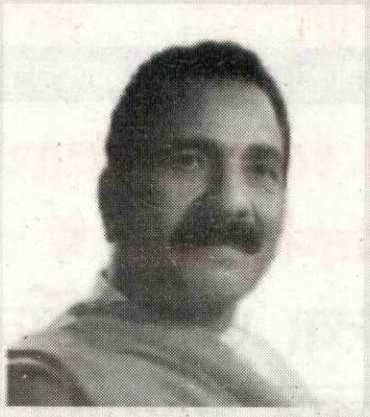

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं दिल्ली के कर्मठ आर्यनेता ब्र. राजसिंह आर्य जी का 5 जनवरी, 2015 को हृदय गति रूक जाने के कारण डॉ. राममनोहर लोहिया अस्पताल दिल्ली में 61 वर्ष की अल्पायु में आकस्मिक निधन हो गया। इस दुःखद समाचार से समूचे आर्य जगत् को गहरा दुःख पहुँचा है। उनका अन्तिम संस्कार 6 जनवरी को सैकड़ों आर्यजनों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दिल्ली में निगमबोध घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में 11 जनवरी, 2015 को पंजाबी बाग में 11 से 2 बजे तक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता इस दुःखद अवसर पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति एवं सद्गति तथा उनके साथ कार्य कर रहे आर्यजनों एवं पारिवारिकजनों को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

पृष्ठ–1 का शेष

श्रद्धानन्द बलिदान समारोह एवं श्री धर्मपाल विद्यार्थी का जन्म दिवस समारोह

करके उन्हें अज्ञान एवं अंधेरे में धकेल रहे हैं। धर्मभीरू जनता ऐसे प्रपंचियों के जाल में फंसकर विभिन्न अनाचार, अत्याचार, पापाचार की शिकार हो रही है। हरियाणा के कथित संत रामपाल दास और एक अन्य कथित संत आशाराम की कारगुजारियाँ आप सबके सामने है। उन्होंने कहा कि जब तक लोग बुद्धि, विवेक और सृष्टि नियम के पैमाने पर धर्म और धर्म के नाम पर चल रहे सारे धन्धों को नहीं परखेंगे तब तक इनके जाल से मुक्त नहीं हो सकते। स्वामी जी ने विशाल जन-समुदाय से अपील की कि वे महर्षि दयानन्द के वेद सम्मत विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करें। स्वामी जी ने बताया कि आगामी दिनों में कई रचनात्मक कार्य करने की योजना बनाई गई है। जिसमें 14 से 23 फरवरी, 2015 तक नशाखोरी, पाखण्ड व कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध पूरे हरियाणा में जन-जागरण यात्रा निकाली जायेगी। जो हरियाणा के सभी जिलों से होकर निकलेगी। 8 से 15 मार्च, 2015 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली में बेटी बचाओ महायज्ञ का आयोजन किया गया है। एक लाख युवाओं से नैतिकता, ईमानदारी व आध्यात्मिकता को अपनाने तथा नशाखोरी जैसी बुराईयों से दूर रहने के लिए संकल्प पत्र भरवाये जायेंगे। नशाबन्दी समिति हरियाणा की 51 सदस्यीय समिति का गठन किया गया है जिसमें प्रधान स्वामी रामवेश जी होंगे तथा आचार्य सन्तराम जी सचिव होंगे। 11 जनवरी, 2015 को रोहतक में नारी सशक्तिकरण सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर श्री अर्जुन देव महाजन का स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। उन्होंने अपने परिवार की ओर से वेद भाष्य प्रकाशन के लिए स्वामी आर्यवेश जी को एक लाख एक हजार एक सौ ग्यारह रुपये की राशि भेंट की थी। इस अवसर पर स्वामी शिवानन्द जी, श्री राम जी लाल सुमन, स्वामी विश्वानन्द जी ने भी अपने विचार प्रकट किये। पूरे कार्यक्रम के सूत्रधार श्री रमाकान्त सारस्वत थे जो आगरा के एक जुझारू संघर्षशील नेता हैं। पदों से अलग हटकर ये बड़े-बड़े कार्य करते रहते हैं कार्यक्रम में डॉ. विद्यासागर गुप्ता पूर्व प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा भी उपस्थिति थे। कार्यक्रम के उपरान्त विशेष भोजन की व्यवस्था की गई थी जिससे विविध सुमधुर भोजन से आतिथ्य किया गया। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

thearyasamaj.org

सामाजिक क्रांति के शाश्वत सूत्र

– डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

...गतांक से आगे

पत्रकारिता

लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ देश का प्रिंट और इलैक्ट्रोनिक मीडिया है। ब्रिटिश कालीन मीडिया और आज के मीडिया में आकाश-पाताल का अन्तर है। ब्रिटिश कालीन मीडिया एक आदर्श था, एक धर्म था, एक क्रांति थी जिसकी वजह से अदालतों में उसे आये दिन भारी-भरकम जमानतें, जेल व जुर्माने भरने पड़ते थे, अपनी अस्मिता और अस्तित्त्व को दाँव पर लगाना पड़ता था, झूठे मुकदमों का सामना करना पड़ता था, मनमाने फैसलों के कारण लम्बी सजाएँ काटनी पड़ती थीं। तब का मीडिया व्यवसाय नहीं, मिशन था, वह मालिक की बंदिश में नहीं स्वतन्त्रमन: होकर काम करता था। आजाद भारत का मीडिया मिशन कम व्यवसाय अधिक है। पत्रकार अपने मालिक या कम्पनी का बंधक होता है और वे विज्ञापनदाताओं और सरकारों के बंधक होते हैं। बिना विज्ञापन के पत्रकारिता चल ही नहीं सकती क्योंकि युग प्रतिस्पर्धा का है। साहसी पत्रकार को राजनीतिक दलों, सरकारों व आपराधिक मानसिकता वालों का प्राय: कोपभाजन बनना पड़ता है अत: आजीविका के लिए जहाँ उसे दुतकार, फटकार, स्थानांतरण के विषदंश झेलने पड़ते हैं वहाँ प्राणों से भी कई बार हाथ धोने पड़ जाते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के आने से स्थिति तेजी से बदली है, समालोचना को नई व पैनी धार मिली है। श्रोता-ग्राफ (टी. आर. पी.) को ऊँचा उठाने के लिए अब जो उत्साह, त्वरता, प्रतिस्पर्धा, जोखिम, साहस पत्रकारिता में झलकने लगा है उससे आम आदमी के हितों का संरक्षण मिलना शुरू हो गया है। फिर भी मीडिया में पारदर्शिता और निरपेक्षता को लेकर सुधार लाने की अभी काफी गुंजायश बाकी है जिससे सभी पक्षों को अपना पक्ष रखने का नैसर्गिक अधिकार प्राप्त हो सके। अंधविश्वास, पाखण्ड, फलित ज्योतिष, गुरुडम, तन्त्र-मन्त्र को लेकर जहाँ कुछ चैनलों ने इनके विरुद्ध मुहिम छेड़ रखी है वहीं कुछ चैनल इसका पोषण करते भी दिख रहे हैं अत: इस स्थिति में सुधार लाने की गुंजायश दिखती है। अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन को जो प्रखरता, भव्यता, गरिमा मीडिया के कारण मिली वह अपने आप में एक प्रतिमान है। कॉमनवेल्थ गेम्स, स्पैक्ट्रम, कोयला आबंटन में हुए घोटालों को प्रकाश में लाने की जो भूमिका मीडिया ने निभाई वह अपने आपमें एक आदर्श था। राष्ट्रीय समस्याओं को तत्परता से सम्पादकीय, अग्र लेखों व बहसों के जरिये प्रसारित करने का समाधानपरक दायित्व अपने आपमें सत्यं, शिवं, सुन्दरम का ही प्रस्तुतिकरण है। निर्भया काण्ड को यदि मीडिया कवर न करता तो उसका राष्ट्रव्यापी प्रभाव कदाचित ही देखने को मिलता जिसने सरकार, पुलिस, प्रशासन और जनता को एक साथ ही झकझोर कर रख दिया था। इससे आलोडित होकर संसद व कानून विशेषज्ञों को भी हरकत में आना पड़ा। देश के मीडिया का ईमानदार, जागरूक व सक्रिय रहना राष्ट्र व समाज के ही नहीं बल्कि स्वयं मीडिया के भी हित में है। भारतीय मीडिया का जन्म समाज सुधार व स्वाधीनता आन्दोलन की कोख से हुआ था अत: उसमें जनहित, समाज-हित, राष्ट्रहित के संस्कार स्वाभाविक रूप से अक्षुण्ण व मंडित हैं। इस दृष्टि से इस क्षेत्र में यदि विदेशी तत्वों का प्रवेश होता है, जिसकी सम्भावनाएं बढ़ रही हैं, तो विकट स्थिति पैदा होगी।

राजधर्म, राष्ट्रधर्म और युगधर्म तीनों का यह तकाजा है कि लोकतन्त्र के चारों स्तम्भ विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और पत्रकारिता सुदृढ़ हों, पवित्र हों, संकल्पित हों, सक्रिय हों, प्रभावी हों, भ्रष्टाचार मुक्त हों, तेजस्वी हों, मुखर हों, निर्भय हो, उत्साही हों, जिससे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के हित संरक्षित हों, लूट का बाजार गरम न हों, शोषण की प्रवृत्ति पोषित न हो, घोटालों की हवा न बहे, रिश्वत का लेन-देन न रहे। आज़ादी का अर्थ स्वेच्छाचारिता, स्वच्छंदता, उच्छृंखलता, निरंकुशता, पशुता को लांघ चुकी स्वार्थपरता नहीं है, न ही होना चाहिए। आजादी का अर्थ है एक ऐसे स्वस्थ समाज का निर्माण जिसमें व्यक्ति पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का निर्वहन सुगमता से, बिना किसी व्यवधान के कर सके। जब तक व्यक्ति को आजीविका का, शिक्षा का, स्वास्थ्य का, अभिव्यक्ति का, सुरक्षा का, स्वाभिमान का, न्याय का नैसर्गिक अधिकार नहीं मिलेगा उसके लिए आज़ादी अर्थहीन है। जिस देश की एक तिहाई जनता गरीबी रेखा से नीचे रहने को लाचार हों, तीन लाख किसान कर्जदार होने से आत्म हत्या कर चुके हों, जहाँ हर मिनट में एक महिला बलात्कार की शिकार होती हो, जहाँ हर एक घण्टे में एक व्यक्ति की हत्या कर दी जाती हो, जहाँ हर दिन अपहरण और फिरौती मांगी जाती हो, जहाँ चार लाख कश्मीरी ब्राह्मणों को दर-बदर कर दिया गया हो, जहाँ आजादी के बाद 68 सालों में हजारों साम्प्रदायिक दंगे हो चुके हों, जिस देश में घोटाले, घूस, घपले चरम पर पहुँच चुके हों, जहाँ आज भी अन्धविश्वास, पाखण्ड, गुरुडम का बोलबाला हो, जहाँ आज भी ढेरों सामाजिक कुरीतियाँ फन उठाये खड़ी हों उस समाज व देश को क्या आज़ादी का अर्थ समझ आ चुका है? नहीं, इसलिए हर क्षेत्र व दिशा में सुधार की आवश्यकता है। राष्ट्रीयता का बोध आज भी अभाव के आंसू रो रहा है। मुक्कमल आज़ादी के संस्कारों का बीजवपन अभी तक भारतीय सन्तति में हो ही नहीं पाया है। राष्ट्रवासियों को गुमराह करने वाले अनेक विदेशी तत्त्व और संगठन देश में घुसपैठ कर चुके हैं जिससे स्थिति और अधिक विकट बनती जा रही है। इस समूची दुर्व्यवस्था को यदि हम कोई एक संज्ञा देना चाहें तो उसके लिए एक ही शब्द पर्याप्त होगा-भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार की पहुँच धन तक सीमित नहीं है बल्कि यह हमारे आचरण, हमारे विचार, हमारी प्रवृत्ति तक में घुसपैठ कर चुका है। जो भी व्यवस्था व्यक्ति के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, संस्कारिक हितों का दोहन और शोषण करती है वह अपने आपमें भ्रष्टाचार ही है। वस्तुत: इस महामारी से निपटने के हमारे संसाधन, हमारी नियति, नीयत और नीति, हमारी दक्षता और

साम्प्रदायिकता/जातिवाद /पाखण्ड/शोषण/नारी विष-वृक्ष पल्लवित, उसे उखाड़ फेंकना ही अपने इस राष्ट्रधर्म का /भ्रष्टाचार/नशाखोरी उत्पीड़न से जो पुष्पित फलित हो रहा है राष्ट्रधर्म है। क्या आप पालन कर रहे हैं?

संकल्पबद्धता, हमारी तैयारियाँ काफी कम हैं। यह बहुपक्षीय समस्या है अत: हर स्तर पर एक राष्ट्रीय अभियान चलाकर, युद्ध स्तर पर, इसका सामुख्य करना होगा।

नशाखोरी

शराब, बीयर, ताड़ी, भांग, चरस, स्मैक, ब्राउन शुगर, तम्बाकू, सिग्रेट, बीड़ी, अफीम, पोस्त, गुटका आदि नशीले पदार्थों का सेवन करना नशाखोरी है। नाबालिक लड़के-लड़कियों को ये चीजें बेचना, सप्लाई करना, पिलाना कानूनन अपराध है। बीड़ी, सिग्रेट के पैकटों पर तो कानूनन ये निर्देश लिखे होते हैं कि इनका सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि नशीले पदार्थों का सेवन करने से कैंसर, तपेदिक, दमा, हृदय रोग जैसी पचासों बीमारियाँ हो जाती हैं। बलात्कार के अधिकांश काण्ड नशे की हालात में ही होते हैं। नशे की हालत में ही हत्या जैसे संगीन अपराध होना आम बात है। नशाखोरी का सबसे दु:खद पहलू यह है कि ड्राइविंग के दौरान अनेक सड़क दुर्घटनाएं प्रतिवर्ष होती हैं। अकेले दिल्ली शहर के आंकड़े बतलाते हैं कि वर्ष 2010 में शराब पीकर वाहन चलाने के 11388 चालान ट्रैफिक पुलिस ने काटे। वर्ष 2011 में यह संख्या 18073, वर्ष 2012 में 25678, वर्ष 2013 में 26633 तक पहुँच गई। वर्ष 2014 में 30 जून तक 17227 चालान कट चुके हैं। शराब पीकर वाहन चलाने वालों में पुरुष ही नहीं महिलाएँ भी शामिल हैं। तेज गति से वाहन चलाने, खतरनाक ड्राइविंग करने, गलत लेन में वाहन चलाने जैसी धाराएँ चालान में लगाई जाती हैं जिनमें कम से कम छह माह की सज़ा और एक हजार रुपये जुर्माने का प्रावधान है जो नाकाफी है। किसी बेकसूर के कुचलने पर आई.पी.सी. की धारा-304ए यानि लापरवाही से मौत का मामला दर्ज होता है जिससे आरोपी कोर्ट से आसानी से जमानत पर रिहा हो जाता है। ऑनलाइन सिस्टम के जरिये यह पता चला है कि दिल्ली में ऐसे 15 हजार लोग हैं जो शराब पीकर पकड़े जाने के बाद भी एक बार या दूसरी बार फिर पकड़े गये हैं। इनके वाहन जब्त करने की कोशिशें जारी हैं। दिल्ली में ऐसे अनेक दर्दनाक हादसे हो चुके हैं जिनमें सड़क किनारे सो रहे लोगों को नशेड़ी वाहन चालक ने रौंद कर मार डाला। नशाखोरी के कारण व्यक्ति के धन का, सेहत का, इज्जत का तो बंटाधार होता ही है इसके साथ-साथ अपराधों का ग्राफ भी ऊँचा उठता है। राष्ट्रीय श्रम और कार्य संस्कृति भी प्रभावित होती है। नशेड़ी के परिवार पर दृष्टिपात करें तो आये दिन का गृह-क्लेश रहता है, बच्चे कुपोषण का शिकार होते हैं, उनकी शिक्षा-दीक्षा प्रभावित होती है, सामाजिक प्रतिस्पर्धा में वे बेचारे कहीं टिक नहीं पाते। शराबखोरी और मांसाहार का तो चोली-दामन का साथ रहता है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि चीन को निष्प्रभावी बनाने के लिए उसके एक शत्रु देश ने गुपचुप तरीके से बृहद स्तर पर अफीम की सप्लाई शुरू कराई थी जिससे चीन की दो पीढ़ियां अफीमची बन गई थीं, ऐसा ही घिनौना प्रयास पाकिस्तान ने पंजाब को अफीमची बनाने के लिए किया जिससे कि भारतीय सेना को भर्ती के लिए पंजाब से जवान न मिल सकें। आज भी अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल से भारत के बड़े हिस्से में स्मैक, ब्राउन शुगर, हीरोइन तथा दूसरे प्रकार की ड्रग्स तस्करी के जरिये सप्लाई होती हैं। देश के लाखों बच्चे अब तक ड्रग्स का सेवन कर अपना बचपन और जवानी खोकर काल ग्रस्त हो चुके हैं। नशाखोरी के लिए जब उन्हें घर से, दोस्तों से पैसा नहीं मिलता तो वे सार्वजनिक सम्पत्ति पर हाथ साफ करने लगते हैं, अड़ोस-पड़ोस में चोरी करने लगते हैं। राहजनों को लूटते हैं, स्टेशन या बस-स्टेण्ड से सामान चोरी करते हैं। कहीं-कहीं तो स्कूल-कॉलेजों तक तस्करों की पहुँच देखी जा चुकी है। व्यक्ति एक बार ड्रग्स के चक्कर में फंस जाये तो फिर कोई उपचार नहीं, मौत ही उससे उसका पिंड छुड़ा पाती है।

नशाखोरी की इस भयावह दास्तां से देश की सभी नियामक इकाइयाँ परिचित हैं जिनमें सरकार, प्रशासन, अदालत सभी आ जाते हैं लेकिन इसके बावजूद राजस्व के लोभ में नशाखोरी को बनाये रखा जा रहा है। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेसी शराब के ठेकों व दुकानों पर धरने देते थे, विरोध करते थे, लोगों को समझाते थे। गांधी जी बार-बार कहते थे कि आज़ादी मिलते ही पहला काम शराबबन्दी का होगा। लेकिन आज शराब पंचायत से लेकर संसद तक उपलब्ध है। गुजरात जिसे ड्राई प्रोविंग घोषित किया जा चुका है वहाँ भी शराब तस्करी के जरिये उपलब्ध है। आर्य समाज के शराबबन्दी आन्दोलन से प्रभावित होकर चौ. बंसीलाल सरकार ने हरियाणा में शराबखोरी पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। लेकिन जब उन्होंने देखा कि राजस्व से हाथ धोने के बावजूद प्रदेश को शराब से मुक्ति नहीं मिली है और दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश से शराब की तस्करी हो रही है तो उन्हें यह प्रतिबन्ध उठा लेना पड़ा। शराबबन्दी आन्दोलनों की विफलता का एक बड़ा कारण यही है कि राजस्व की हानि उठा कर भी तस्करी से आ रही शराब पर काबू नहीं पाया जा सकता। इसका दूसरा बड़ा कारण यह भी है कि शराब के धंधे से राजनीतिक दलों, नेताओं, शासकों, अधिकारियों, पुलिस; राजस्व विभाग के कर्मचारियों की जेब भी गरम रहती है। तस्करी के दौरान तो यह मुनाफखोरी कई गुना बढ़ जाती है।

देश में नशाखोरी पर प्रतिबन्ध इस कारण भी लगना असम्भव है क्योंकि भारतीय संविधान ने जहां व्यवसाय करने की छूट दे रखी है वहां स्पष्ट नहीं किया है कि कौन-सा व्यवसाय अहितकर होने से प्रतिबंधित होगा। शराब की डिस्टिलरियाँ अधिकांशत: गन्ना मिलों पर निर्भर है, गले-सड़े अनाज से भी शराब बनती है अत: शराब पर प्रतिबन्ध लगने से अनेक पार्श्ववर्ती समस्याएं उतपन्न होने की सम्भावनाएं रहती हैं। शराब की डिस्टिलरियों में, बीड़ी, सिग्रेट के कारखानों में लाखों श्रमिक काम करते हैं, शराब के ठेकों पर लोग नियुक्त हैं, किसान तम्बाकू की खेती करते हैं अत: प्रतिबन्ध लगने की स्थिति में बेरोजगारी की समस्या पैदा होगी।

शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

गुरुकुल धीरणवास, जिला-हिसार का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव
13-14 दिसम्बर, 2014 को समारोह पूर्वक सम्पन्न

पूरे देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू की जाये

– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल धीरणवास हिसार, हरियाणा का वार्षिकोत्सव दिनांक 13-14 दिसम्बर, 2014 को समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 13 दिसम्बर को विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने शराब तथा अन्य मादक द्रव्यों से होने वाली हानियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज शराब एवं नशाखोरी का प्रचलन इतना बढ़ गया है कि हर गांव एवं मोहल्ले में शराबियों का आतंक देखने को मिल जाता है।

लाखों परिवार शराब की लत से उजड़ गये हैं। जिस घर में एक व्यक्ति शराबी बन जाता है उस घर की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति दयनीय हो जाती है। युवा वर्ग में आज मादक द्रव्यों तथा ड्रग्स का प्रभाव निरन्तर बढ़ता जा रहा है जो हमारे देश के लिए भारी चिन्ता का विषय है। इंजेक्शन लगाकर, सुल्फा, स्मैक, अफीम, गांजा तथा हिरोईन जैसे मादक पदार्थों का सेवन करके लाखों नौजवान अपनी जवानी को नष्ट कर रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि अभी पिछले दिनों भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने कार्यक्रम 'मन की बात' में कहा कि नशे से पैदा होने वाला धन आतंकवादियों की गोली से निकलता है, अर्थात् आतंकवाद का जनक भी नशा ही है। स्वामी जी ने कहा कि यदि प्रधानमंत्री जी नशे के विरुद्ध इतने ही संवेदनशील हैं तो उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर अविलम्ब नशाबन्दी लागू करनी चाहिए। महात्मा गांधी और महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि गुजरात से सम्बद्ध होने के नाते देश में पूरी तरह शराब तथा नशे को बन्द कर इन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर उन्हें अपनी बात को पूर्ण करना चाहिए तथा देश के युवाओं को पतन से बचाना चाहिए। स्वामी जी ने वेद के मनुर्भव मिशन के प्रति लोगों को सजग करते हुए आह्वान किया कि आज प्रत्येक व्यक्ति को अच्छा इंसान बनने की आवश्यकता है। भले ही वह किसी भी धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई हो, लेकिन यदि वह इंसान बन जाये इंसानियत के गुण उसमें आ जायें, यदि वह अच्छे गुणों को धारण कर ले तो वह चाहे किसी भी धर्म का हो अच्छा इन्सान बन जाता है। स्वामी जी ने कहा कि भौतिकवाद की इस आंधी में जीवन से नैतिकता, ईमानदारी, परोपकार जैसे गुण गायब होते दिखाई दे रहे हैं। आज पुनः इन गुणों को युवा वर्ग में पैदा करने की आवश्यकता है। जिसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक अभियान चलाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के अतिरिक्त कोई भी सम्प्रदाय या संस्था इस विषय पर पूर्णरूप से संवेदनशील दिखाई नहीं देती।

इस अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशक रामनिवास आर्य ने पाखण्ड के विरुद्ध अपने भजनों के द्वारा प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्रीमती संगीता आर्या ने महिलाओं को जोशीले गीत सुनाकर उत्साहित किया तथा कुमारी कल्याणी आर्या ने महर्षि के जीवन पर भजनों के माध्यम से प्रकाश डाला। इस अवसर पर नलवा क्षेत्र के विधायक श्री रणवीर सिंह गंगवा ने भी अपने विचार रखे। इनके अतिरिक्त इनेलो नेता युद्धवीर सिंह आर्य ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुरुकुल कार्यकारिणी के प्रधान श्री इन्द्रजीत सिंह आर्य ने की तथा मंच संचालन महात्मा आनन्द मुनि जी ने किया। मंच पर स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज गुरुकुल के कुलपति, स्वामी कृष्णानन्द जी गुरुकुल के मंत्री, सेठ बजरंग लाल आर्य, शोभाचन्द्र आर्य, जगदीश चन्द्र आर्य, आर्य समाज नागोरी गेट हिसार के प्रधान, चौधरी बदलू राम आर्य गुरुकुल आर्यनगर के आचार्य, रामस्वरूप, सूबे सिंह आर्य-मुकलान, अजमेर सिंह, ताराचन्द्र आर्य, सत्यपाल अग्रवाल, आचार्य सन्तराम, रामकुमार, नन्दराम सांगवान, दलबीर सिंह चौधरी, डॉ. अनूप सिंह, मनीराम -हिसार, चतर सिंह एवं ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य सहित अनेकों गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस के अवसर पर
कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं धार्मिक, अन्धविश्वास के विरुद्ध
पलवल से चण्डीगढ़ की ऐतिहासिक जन-चेतना यात्रा
दिनांक : 14 से 23 फरवरी, 2015 तक

सभी संन्यासियों, वानप्रस्थियों, कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं इच्छुक महानुभावों से यात्रा में सम्मिलित होने की अपील

आगामी महर्षि दयानन्द जन्मदिवस के अवसर पर दिनांक 14 फरवरी, 2015 से पलवल नगर से प्रारम्भ होकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध आर्य समाज की एक ऐतिहासिक जन-चेतना यात्रा हरियाणा के सभी 21 जिलों से होती हुई 23 फरवरी, 2015 को प्रदेश की राजधानी चण्डीगढ़ में सम्पन्न होगी। यात्रा के दौरान सैकड़ों स्थानों पर जन-सभाएं, नुक्कड़ सभाएं एवं यज्ञ आदि के द्वारा जन-जन में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी तथा पाखण्ड के विरुद्ध विशेष चेतना पैदा की जायेगी। इस यात्रा में आर्य समाज के संन्यासी, वानप्रस्थी, कर्मठ कार्यकर्ता, महिलाएं एवं समय देने के इच्छुक महानुभाव भाग लेंगे। यात्रा समाप्ति के पश्चात् हरियाणा के राज्यपाल एवं हरियाणा के मुख्यमंत्री को एक विज्ञापन भी दिया जायेगा और प्रदेश में उपरोक्त बुराईयों पर रोक लगाने के लिए आग्रह किया जायेगा। यात्रा की तैयारी युद्ध स्तर पर की जा रही है। समस्त आर्य महानुभावों एवं संन्यासियों, आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों से प्रार्थना है कि वे यात्रा को सफल बनाने के लिए दिल खोलकर सहयोग करें। जो सज्जन अपना वाहन यात्रा के लिए उपलब्ध कराकर सहयोग देना चाहते हैं, अपना अमूल्य समय देकर 10 दिन तक यात्रा में सम्मिलित होना चाहते हैं या आर्थिक सहयोग करके इस पवित्र अभियान को सम्बल प्रदान करना चाहते हैं, उन सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस राष्ट्र यज्ञ में आगे आकर अपना योगदान करें। उनका यह योगदान भविष्य में इतिहास का एक हिस्सा बनेगा। आप तो जानते ही हैं कि इस प्रकार के शुभ कार्यों की सफलता आप जैसे सहयोगियों पर ही निर्भर होती है।

– स्वामी आर्यवेश, अध्यक्ष
जनचेतना यात्रा

वेदाचार्य, दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य वैदिक विद्वान पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् प्रधान शम्भू दयाल संन्यास आश्रम, गाजियाबाद का सार्वजनिक अभिनन्दन आगामी 15 मार्च, 2015 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में किया जायेगा। इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से हजारों आर्यजन एवं स्वामी जी महाराज के शिष्य पधारकर उनका अभिनन्दन करेंगे। इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जायेगा जिसमें स्वामी जी महाराज के जीवनवृत्त, विभिन्न विद्वानों के संस्मरण, शुभकामना संदेश एवं चित्रावली प्रकाशित की जायेगी। समस्त विद्वानों, संन्यासियों एवं स्वामी जी के शुभचिन्तकों से निवेदन है कि वे अपने संक्षिप्त संस्मरण तथा स्वामी जी का कोई चित्र यदि उनके पास हो तो शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

– स्वामी आर्यवेश, अध्यक्ष स्वामी चन्द्रवेश अभिनन्दन समिति

thearyasamaj.org

आर्य समाज नरवाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि के रूप में पधारे

नरवाना आर्य समाज के तत्वावधान में मंगलवार को आर्य वरिष्ठ विद्यालय में प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर कन्या भ्रूण हत्या व नशाखोरी के विरुद्ध विशेष आयोजन किये गये। कन्या भ्रूण हत्या व नशाखोरी के खिलाफ स्पर्धा भी हुई जिसमें बच्चों ने अपनी प्रतिभा दिखाई तथा बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से आमंत्रित थे।

स्वामी जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हरियाणा के माथे से कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के कलंक को मिटाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आर्य समाज ने कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जागरूकता अभियान चलाने का निर्णय लिया है। स्वामी जी ने कहा कि आज देश में पश्चिमी सभ्यता के आकर्षण में हमारे देश के युवा गहरे तक धंसते जा रहे हैं। उनमें उच्छृंखलता, अनैतिकता तथा नशे का प्रचलन निरन्तर बढ़ता जा रहा है। हम सबको मिलकर युवाओं को संस्कारित एवं शिक्षित करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना होगा। चरित्र निर्माण शिविरों के माध्यम से नैतिकता, ईमानदारी, समाजसेवा, राष्ट्रभक्ति आदि के संस्कार देकर उनके जीवन की नींव मजबूत की जानी चाहिए। तथा युवाओं में प्रेम, स्नेह, वात्सल्य जैसे गुणों को धारण कराने के लिए

आर्य समाज के माध्यम से आर्यजनों को विशेष कार्यक्रम चलाने होंगे।

स्वामी जी ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या एक जघन्य पाप है। जिसके कारण प्रदेश में तथा देश में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की संख्या निरन्तर कम होती जा रही है जो काफी चिन्ताजनक है। उन्होंने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या समाज के लिए कलंक है तथा सबसे ज्यादा घातक है। आर्य समाज ने कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जागरूकता अभियान चलाने का निर्णय लिया है। 11 जनवरी, 2015 को रोहतक में नारी सशक्तिकरण सम्मेलन, महर्षि दयानन्द जी जन्मदिवस पर 14 से 23 फरवरी, 2015 तक पूरे हरियाणा में जागरूकता यात्रा निकाली जायेगी जो पलवल से शुरू होकर चण्डीगढ़ तक जायेगी। इस अवसर पर प्रधान इन्द्रजीत आर्य, नरेश आर्य, अश्विनी आर्य, हरीश कुमार, पवन कुमार, अनिल कुमार, विवेक आर्य, आमोद गर्ग, किरण लाल, रमेश कुमार, भगवान दास, राजकुमार, अनुराग आर्य, अरूण कुमार, संजय चौधरी, रजीला सिंघला व सुनीता नारंग मौजूद थे।

आर्य कन्या पी. जी. कॉलेज खुर्जा, जिला-बुलन्दशहर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दिलाई हजारों छात्राओं को शपथ

आर्य कन्या पी. जी. कॉलेज खुर्जा के विशाल प्रांगण में आर्य कन्या पी. जी. कॉलेज का वार्षिकोत्सव एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस समारोह भव्यता के साथ मनाया गया। कॉलेज प्रबन्ध समिति के विशेष आमंत्रण पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी कार्यक्रम में पधारे। आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी भी विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित थे। हजारों छात्राओं, सैकड़ों महिलाओं एवं सैकड़ों गणमान्य जनों की उपस्थिति में स्वामी जी ने श्रद्धानन्द जी के बलिदान की गाथा सुनाकर श्रोताओं को भावुक कर दिया। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का तप, त्याग, बलिदान आज पूरे राष्ट्र के लिए प्रेरणा देने वाला है। स्वामी जी ने महिला शिक्षा के लिए स्वामी श्रद्धानन्द के द्वारा जालन्धर में कन्या विद्यालय स्थापित करने का विशेष रूप से उल्लेख किया। वर्तमान समय की ज्वलन्त समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं पर होने वाले अत्याचार एवं अपमानजनक घटनाओं के विरुद्ध महिलाओं को स्वयं खड़ा होने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि अपनी रक्षा करने के लिए आप सबको आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लेना चाहिए तथा अपने आत्मविश्वास को मजबूत बनाना चाहिए। कन्या भ्रूण हत्या के नाम पर हो रहे अपराध और कानूनी पाप को रोकने के लिए आप सबको आगे आना चाहिए। स्वामी जी ने हजारों छात्राओं को खड़ा करके एक हाथ आगे करके दहेज, कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध संघर्ष का संकल्प दिलवाया जिससे पूरी सभा में एक कौतुहल सा पैदा हो गया। एक संन्यासी के द्वारा दिलवाया गया संकल्प हजारों छात्राओं के लिए प्रेरणा का एक मनोरम दृश्य था। इस अवसर पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने आर्य समाज के इतिहास पर विस्तार से प्रकाश

डालते हुए बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, राम प्रसाद बिस्मिल तथा लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द आदि देशभक्तों के बलिदान से आज युवाओं को विशेष प्रेरणा लेनी चाहिए। इन महान पुरुषों के जीवन में नैतिकता, ईमानदारी, परोपकार, समर्पण, तप, त्याग एवं बलिदान कूट-कूट कर भरा था। आज हमारे युवक-युवतियों में इस प्रकार के संस्कार दिया जाना समय की आवश्यकता है।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली युवा वर्ग को अनैतिकता की ओर धकेल रही है जो हम सबके लिए चिन्ता की बात है। इस अवसर पर कॉलेज की छात्राओं ने गीत एवं नाटक प्रस्तुत कर अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया। प्रबन्ध समिति के सचिव तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री धीरज सिंह जी ने स्वामी जी का परिचय देते हुए उनके यहां पधारने पर भावभीना अभिनन्दन किया। कॉलेज की प्राचार्या महोदया ने स्वामी जी को कॉलेज की तरफ से शॉल तथा स्मृति चिन्ह भेंट किया और अपने संबोधन में कॉलेज की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

thearyasamaj.org

ग्राम-सैदअलीपुर, तहसील-नारनौल, महेन्द्रगढ़ में स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में

15 से 21 दिसम्बर, 2014 तक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

ग्राम-सैदअलीपुर, तहसील-नारनौल, महेन्द्रगढ़ में विशेष ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन 15 से 21 दिसम्बर, 2014 तक समारोह पूर्वक किया गया। इस विशेष यज्ञ के ब्रह्म स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती थे। यज्ञ की पूर्णाहुति 21 दिसम्बर को सम्पन्न हुई। 17 दिसम्बर, 2014 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का यज्ञ पर विशेष प्रवचन हुआ। उन्होंने यज्ञ की विस्तृत व्याख्या करते हुए सभी को यजमान बनने की प्रेरणा दी। स्वामी जी ने कहा कि किसी भी व्यक्ति के ऊपर अच्छे कार्य का उत्तरदायित्व डाला जाता है तो वह व्यक्ति कार्य सम्पन्न होने पर यजमान कहलाता है। यज्ञ की अग्नि उसका संकल्प होता है। यज्ञ की अग्नि को तीव्र रूप से प्रज्वलित रखना अनिवार्य है। उसी प्रकार संकल्प की अग्नि भी तीव्र होनी चाहिए। उत्तरदायित्व को कुशलता पूर्वक निभाना भी एक यज्ञ है। स्वामी जी ने कहा कि आज समाज में विभिन्न बुराईयाँ फैलती जा रही हैं जिससे पूरे समाज का ताना-बाना बिखरता जा रहा है। ऐसे में आवश्यकता अच्छे यजमानों की है। जो विभिन्न उत्तरदायित्व लेकर उसका निर्वहन कर सके और समाज में फैली बुराईयों को दूर कर सकें।

इस यज्ञ के मुख्य यजमान महात्मा जगदीश मुनि उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुखदा देवी को स्वामी आर्यवेश जी ने विशेष साधुवाद देते हुए इस अच्छे कार्य के लिए बधाई दी। विदित हो कि महात्मा जगदीश मुनि विश्व प्रसिद्ध योग गुरु स्वामी रामदेव जी के परिवार के ही प्रतिष्ठित सदस्य हैं तथा यह प्रतिवर्ष अपने निवास पर इसी प्रकार के विशाल यज्ञ आयोजित करते हैं। आपने स्वामी दिव्यानन्द जी से वानप्रस्थ की दीक्षा ली है। इस अवसर पर सैकड़ों स्त्री-पुरुषों ने इस यज्ञ में आहुति देकर अपने को कृत-कृत किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामन्त्री श्री विरजानन्द जी, आचार्य सन्तराम जी तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र जी भी उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री विरजानन्द जी का भी उद्बोधन हुआ। स्वामी दिव्यानन्द जी ने स्वामी आर्यवेश जी का यज्ञ में पधारने का विशेष आभार व्यक्त किया। यज्ञ का पूरा दायित्व महात्मा जगदीश मुनि के बड़े सुपुत्र श्री देवेन्द्र जी ने वहन किया हुआ था। यह विशेष यज्ञ अत्यन्त समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

मूल्यपरक शिक्षा

- अशोक आर्य

सोद्देश्य शिक्षा प्रदान करने हेतु गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का निर्देशन महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश में किया। जिसकी विशेषताएं संक्षेप में प्रस्तुत करने का यहां प्रयास किया जा रहा है।

गुरुकुल में दो शब्द हैं - गुरु+कुल अर्थात् गुरु का परिवार। शिक्षणालय को 'परिवार' की संज्ञा से विभूषित कर अत्यत क्रांतिकारी विचार को जन्म दिया गया। यह एक ऐसा विचार है जिसके आधार पर बिना खून बहाये समाजवाद का भवन अपने आप उठ खड़ा हो सकता है। अथर्ववेद (11/5/3) ने कहा - ''गुरु अपने गर्भ में शिष्य को इस प्रकार से सुरक्षित संभाल कर रखता है जैसे माता अपने पुत्र-पुत्री को गर्भ में सुरक्षित संभाल कर रखती है।'' गुरुकुल प्रवेश के दौरान बालक अपना घर और माता-पिता को छोड़कर आता है और गुरुकुल उसका घर और परिवार बनता है। गुरुकुल में आचार्य उसके माता-पिता तथा शिक्षक तीनों की जिम्मेदारी संभालता था। बालक एक छोटे परिवार से कटता था तो दूसरे बड़े परिवार गुरुकुल अर्थात् सामाजिक परिवेश का अंग बनता था। धीरे-धीरे उसकी तैयारी के साथ समाज में ऐसा सुदृढ़ सम्बन्ध स्थापित होता था कि सारा विश्व उसे अपना लगता था। हो सकता है कि 'स्कूल' शब्द भी संस्कृत के 'कुल' शब्द से उपजा हो। आज के विद्यालयों या विश्वविद्यालयों में कुल की भावना समाप्त होकर ये विद्यालय, विद्यालय और विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि न रहकर फैक्ट्रियाँ बन गये हैं तथा शिक्षा एक व्यवसाय बन कर रह गई है। जिसमें कुलंपति प्राचीन गुरुकुल पद्धति में 'कुल' शब्द के महत्त्व को इंगित कर रहा है, पर अब वह नाम मात्र का कुलपति है और उसका अध्यापक-प्राध्यापक से ऐसा सम्बन्ध रह गया है मानो एक फैक्ट्री का मालिक हो दूसरा मजदूर। इसी प्रकार गुरु शिष्य का सम्बन्ध भी ऐसा रह गया है जैसे गुरु शिक्षा का व्यापारी हो और शिष्य शिक्षा का खरीददार। इस समस्या के समाधान में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही सफल हो सकती है। यहाँ उस पर संक्षेप में विचार किया जाता है।

मानव जीवन निर्माण की योजना महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश में दी है उसका प्रथम सोपान माता-पिता के सान्निध्य में सम्पन्न होता है। बाल शिक्षा के रूप में जिसका विशद् वर्णन सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय सम्मुल्लास में मिलता है। इसी प्रक्रिया का द्वितीय चरण गुरुकुल में आचार्य के सान्निध्य में ही पूर्ण हो सकता है अत: महर्षि जी के दृष्टिकोण में प्रत्येक बालक-बालिका को, माता-पिता के सान्निध्य में अधिकतम 8 वर्ष तक शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात्, गुरुकुल अनिवार्य रूप से भेज देना चाहिए। ऐसा न करने पर जीवन निर्माण की प्रक्रिया अवरुद्ध हो जावेगी।

गुरुकुल प्रवेश से पूर्व की तैयारियाँ -

1. प्रत्येक माता-पिता को यथा सम्भव मनोयोग पूर्वक एवं आवश्यक कर्त्तव्य जान सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सम्मुलास में निर्देशित बिन्दुओं के आधार पर बालक-बालिका को प्राथमिक रूप से शिक्षित कर देना चाहिए।

2. बच्चों को गायत्री मंत्र का उपदेश अर्थ सहित अवश्य कर दें। क्योंकि छात्र प्रारम्भ से ही ईश्वर के प्रति और अपनी बुद्धि के सदुपयोग के प्रति अपने मन में एक आकर्षण उत्पन्न कर लें ताकि भावी जीवन में वह ईश्वर की कृपा से बुद्धि का दुरुपयोग न करें और प्रत्येक निर्णय और कार्य करने से पूर्व, ज्ञान-अज्ञान के प्रश्न पर विचार कर सकें।

3. सन्ध्या, अग्निहोत्र युक्त दैनिक अभ्यास और दिनचर्या महर्षि दयानन्द अपने द्वारा प्रतिपादित शिक्षा और शिक्षण क्रम में प्रारम्भ से ही अर्थात् छात्र-छात्राओं के माता-पिता के संरक्षण में छात्र-छात्राओं को दैनिक दिनचर्या सिखाकर उसको नियमित करने पर बल देते हैं। ताकि छात्र अपने जीवन में इस दिनचर्या को अपनाकर एक उत्कृष्ट, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक जीवन जी सकें।

प्राणायाम पर महर्षि जी ने अत्यधिक जोर दिया क्योंकि मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के लिए प्राणायाम के अतिरिक्त और कोई साधन नहीं है। नियमित प्राणायाम करने से मन और इन्द्रियों के दोष निर्मल हो जाते हैं। यदि हम सन्ध्योपासन की विधि और उस पर स्वामी दयानन्द के निर्देश और उपदेश पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें तो वैदिक सन्ध्योपासन की चार विशेषताएं प्रकट होती हैं :-

1. प्रतिदिन प्रात: सायं अपने शरीर, समस्त कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय और मन-आत्मा का निरीक्षण करना।

2. ईश्वर के प्रति कर्त्तव्यों का बोध होना।

3. सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के प्रति कर्त्तव्यों और जिम्मेवारियों का ज्ञान होना।

4. सन्ध्याकर्ता अर्थात् साधक की प्रवृत्तियों का शीघ्र बाह्यमुखी से अन्तर्मुखी हो जाना। जिससे साधक का आत्मबल और आत्मज्ञान सदैव सुदृढ़ और कुशाग्र बना रहता है।

सन्ध्योपासना के बाद दैनन्दिन दिनचर्या में महर्षि दयानन्द अग्निहोत्र की चर्चा करते हैं। प्रत्येक ब्रह्मचारी को जब तक क्रमश: गृहस्थ, वानप्रस्थ धारण करते हुए या ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास न ले ले, तब तक नियमित दोनों समय प्रात: और सायं अग्निहोत्र करना चाहिए। सन्ध्या/अग्निहोत्र की सुस्पष्ट विधि संक्षिप्त रूप से तृतीय समुल्लास में और विस्तृत रूप से पंचमहायज्ञ विधि और संस्कार विधि आदि में दी हुई है। घर पर माता-पिता और गुरुकुल में आचार्य को चाहिए कि ब्रह्मचारियों के समक्ष प्रतिदिन अग्निहोत्र कर कराकर, विधि सिखला कर उनके लाभ गिना देवें। जिससे ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी उनको जीवन पर्यन्त करते-कराते रहें।

कहने का तात्पर्य यह है कि माता-पिता अपने बच्चों को गुरुकुल भेजने से पूर्व उक्त प्रकार की अच्छी आदतें डालकर संस्कारित कर दें और उपनयन संस्कार कर उनमें विद्या के प्रति रुचि पैदा कर दें।

उपरोक्त प्रकार से जब बालक को गुरुकुल प्रवेश हेतु न्यूनतम योग्यताएं अर्जित करा दी जावें तो बालक बालिकाओं का उपनयन संस्कार कराके उन्हें आचार्य कुल में भेज दिया जावे।

महर्षि जी लिखते हैं 'द्विज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवीत और कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्य कुल अर्थात् अपनी-अपनी पाठशाला में भेज दें। (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

- सम्पादक - सत्यार्थ सौरभ
मो.:-9314235101, 9001339836

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

विशाल महिला सशक्तिकरण एवं बेटी बचाओ सम्मेलन

11 जनवरी, 2015 को इनविटेशन गार्डन हिसार रोड, रोहतक (हरियाणा) में

कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य पाप के विरुद्ध जन-जन में चेतना पैदा करने के उद्देश्य से सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं बेटी बचाओ अभियान के संयुक्त तत्वावधान में विशाल महिला सशक्तिकरण एवं बेटी बचाओ सम्मेलन का भव्य आयोजन 11 जनवरी, 2015 को इनविटेशन गार्डन, हिसार रोड, रोहतक (हरियाण) में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा की समाज कल्याण मंत्री श्रीमती कविता जैन एवं अति विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मनीष ग्रोवर विधायक रोहतक शहर तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती प्रतिभा सुमन प्रदेशाध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा, हरियाणा एवं भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री प्रदीप जैन आदि सम्मिलित होंगे। कार्यक्रम में उन दम्पत्तियों को भी सम्मानित किया जायेगा जिनके केवल पुत्रियाँ हैं पुत्र नहीं हैं। साथ ही बेटी बचाओ अभियान की कुछ कर्मठ कार्यकर्त्रियों को भी सम्मानित किया जायेगा; उन्हें प्रशस्ति पत्र भी भेंट किये जायेंगे। सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

निवेदक

बहन पूनम आर्या	बहन प्रवेश आर्या	आचार्य सन्तराम	ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य
अध्यक्ष, बेटी बचाओ अभियान	महामंत्री, बेटी बचाओ अभियान एवं संयोजक सम्मेलन	स्वागताध्यक्ष	अध्यक्ष, सार्व. आ. यु. प. हरियाणा

बेटी बचाओ अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा

सम्पर्क :- 09416630916, 09354840454

शोक समाचार

आर्य समाज, राजनगर के पूर्व प्रधान श्रीमान् विद्यासागर अरोड़ा की धर्मपत्नी श्रीमती स्वर्ण कुमारी अरोड़ा का देहावसान दिनांक 30 दिसम्बर, 2014 दोपहर 12.02 मिनट पर हो गया, वे 85 वर्ष की थीं। उनकी अन्त्येष्टि वैदिक विधि पूर्व वैदिक मंत्रों की ध्वनि के साथ हिण्डन पर सम्पूर्ण कर दी गई। मुखाग्नि उनके बड़े पुत्र ने दी। अनेक वैदिक बन्धु-बान्धव शामिल हुए।

ज्ञातव्य है कि दिवंगता की पुत्रवधु वंदना अरोड़ा सार्वदेशिक साप्ताहिक में लेखिका हैं और समारोहों में भजन गायिका हैं।

सार्वदेशिक परिवार परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगता की आत्मा को शान्ति प्रदान करें और इस वियोग को सहने की शक्ति समस्त परिवार को दे। उनके पीछे उनका पुत्र-पौत्रादि का भरा पूरा एवं सम्पन्न दानशील परिवार है जो वैदिक विचारधारा में रचा-पचा है।

- बाबूराम शर्मा 'विभाकर'

स्वामी श्रद्धानन्द ने मतान्तरित हिन्दुओं के लिए शुद्धि आन्दोलन का सूत्रपात किया

स्वामी श्रद्धानन्द एक युगान्तकारी महापुरुष थे उन्होंने अन्याय के विरुद्ध लोगों की सम्वेदना को जगाया और विदेशियों द्वारा हिन्दुओं के जबरन धर्मान्तरण पर सवाल उठाया, एक निडर संन्यासी के रूप में स्वातंत्र्य धर्मचक्र का प्रवर्तन किया और मतान्तरित हिन्दुओं की घर वापिसी के लिए शुद्धि आन्दोलन का सूत्रपात किया, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्र के अप्रतिम प्रहरी थे। उक्त विचार स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर काशी आर्य समाज बुलानाला में आयोजित संगोष्ठी में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती ने मंगलवार को बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

काशी आर्य विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने बतलाया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिल्ली की जामा मस्जिद से हिन्दु-मुस्लिम एकता का आह्वान किया था।

विशिष्ट अतिथि पूर्व सभासद लीलाराम सचदेवा ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने दलितों तथा विधवाओं का उद्धार तथा शिक्षा प्रसार के लिए आजीवन संघर्ष किया। डॉ. गायत्री आर्या ने कहा कि कन्या पाठशालाओं और गुरुकुलों की स्थापना कर स्वामी श्रद्धानन्द ने अविस्मरणीय योगदान दिया।

अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री श्रीनाथ सिंह प्रधान काशी आर्य समाज ने बतलाया कि स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति का उच्चस्तरीय अधिष्ठान है।

उक्त बलिदान दिवस की संगोष्ठी में सर्वश्री प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री, काशी आर्य समाज, डॉ. विशाल सिंह कोषाध्यक्ष, बृजभूषण सिंह, लालचंद आर्य, एस. एन. प्रसाद, प्रतिभा सिंह सोनी आदि ने भी विचार व्यक्त किये, श्री रमेश जी आर्य ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुतिकर भाव विभोर कर दिया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, मोती लाल आर्य एवं ज्ञान प्रकाश आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया। यजमान डॉ. जयप्रकाश भारती थे। श्री श्रीनाथ सिंह पटेल, कुमारी विभा, हेमा आर्या, सत्यनिष्ठा आर्य ने भी विशेष आहुतियाँ डाला।

- प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री

भरुच में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक द्वारा धर्म प्रचार

आर्य समाज भरुच (गुजरात) के आमंत्रण पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध दार्शनिक प्रवक्ता श्री स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक रोजड़ भरुच पधारे। आपने यहां के जयेन्द्रपुरी कॉलेज तथा वालिया के एक अन्य कॉलेज में छात्रों के समक्ष प्रेरणादायी प्रवचन किये। दो परिवारों में सत्संग का आयोजन भी किया गया था, जिसमें ईश्वर, कर्मफल आदि गंभीर विषयों पर आपने वैदिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान किया। मुख्य कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 1 जनवरी, 2015 को था, जिसमें आर्य समाज भरुच के मंत्री श्री नाथुभाई जी डोडिया का उनके विवाह के पचास वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में उनके परिवारजनों, मित्रों तथा आर्य समाज की ओर से अभिनन्दन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री स्वामी विवेकानन्द जी ने सफल गृहस्थ जीवन विषय पर अपना मननीय प्रवचन दिया, जिसे श्रोताओं ने शांति पूर्वक सुना। आपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर व्यक्ति को सफल रहने के लिए चार आश्रम तथा चार वर्णों की वैदिक प्रणाली की विस्तार से व्याख्या की और ईश्वर का ध्यान, अग्निहोत्र, स्वाध्याय, माता-पिता आदि की सेवा, पशु-पंक्षी आदि का पालन-रक्षण, तथा अतिथियों के सान्निध्य से ज्ञान-वर्धन आदि को सुखी जीवन के लिए अनिवार्य बताया। आपने मनुष्य जीवन का वास्तविक लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति को बताया और सर्व दुःखों से छूटना, ईश्वर का उत्तम आनन्द प्राप्त करना तथा समस्त सृष्टि में निर्बाध विचरण करना केवल मोक्ष से ही संभव है, यह बताया।

- प्रस्तुतकर्त्ता : भावेश मेरजा, भरुच

स्वामी दयानन्द का मार्गदर्शन ग्रहण कर नई पीढ़ी में वेदों का प्रचार आवश्यक

काशी आर्य समाज, बुलानाला के तत्वावधान में शनिवार को आयोजित मण्डलीय आर्य संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मंत्री पूज्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने कहा कि आज युवा पीढ़ी को राष्ट्रीय सांस्कृतिक भावनाओं से समृद्ध करने की आवश्यकता है, अतः स्वामी दयानन्द के विचारों से मार्गदर्शन ग्रहण कर आर्यजन युवा पीढ़ी को दीक्षित करें।

स्वामी दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल ऐतिहासिक राष्ट्रीय स्मारक बनाया जाये। मण्डलीय आर्य संगोष्ठी में वाराणसी, मिर्जापुर, सोनभद्र, जौनपुर तथा संत रविदास नगर, केराकत के आर्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया। आर्य संगोष्ठी श्री बेचन सिंह उपप्रधान प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। संगोष्ठी के प्रारम्भ में पेशावर में हुए आतंकी तालिबान हमले में मारे गये समस्त छात्रों की आत्मा की शान्ति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए मौन रखकर संवेदना व्यक्त की गयी। तदुपरान्त एक प्रस्ताव पारित कर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मांग की गई कि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड (जहां स्वामी भास्करानन्द की समाधि भी है) की ऐतिहासिकता को देखते हुए उसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया जाये। संगोष्ठी में एक अन्य प्रस्ताव द्वारा 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किये जाने पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री भारत सरकार को बधाई दी गई। संगोष्ठी समारोह का प्रारम्भ सामूहिक ईश प्रार्थना मंत्रों के उच्चारण के साथ हुआ। संगोष्ठी में सर्वश्री प्रकाश नारायण शास्त्री, रमाशंकर आर्य, श्री श्रीनाथ सिंह, उदय आर्य, राधेश्याम आर्य, वीरेन्द्र आर्य, लालचंद आर्य, कन्हैया लाल, विजयनाथ, नागेन्द्र सिंह, ज्ञान प्रकाश आर्य, रूपांजल आर्य, डॉ. इन्दुदेवी, अन्नपूर्णा चौरसिया, रामराज आर्य आदि प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सुझाव दिये। अतिथियों का स्वागत प्रकाश नारायण शास्त्री, धन्यवाद प्रकाश श्री श्रीनाथ सिंह पटेल तथा शांतिपाठ पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने कराया।

- प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री

आर्य समाज खेड़ा अफगान सहारनपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य समाज खेड़ा, अफगान सहारनपुर में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस का कार्यक्रम बड़े उत्साह और उल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर प्रथम अनुज कुमार शास्त्री ने यज्ञ कराया आज के यज्ञमान वीरेन्द्र कुमार और उनकी धर्मपत्नी विजय लक्ष्मी गुप्ता रहे। यज्ञोपरान्त श्रद्धेय डॉ. ओम प्रकाश वर्मा ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनके बचपन का नाम मुंशीराम था। बरेली में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का ओ३म् की व्याख्या पर कई प्रवचन सुनने के उपरान्त अपनी सभी बुराईयों को त्याग करके देश और धर्म के लिए कुछ करने की इच्छा से संन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द बन गये और गुरुकुलीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हरिद्वार के बीहड़ जंगलों में कांगड़ी नामक ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की। पूर्व अपर जिला अधिकारी श्री सत्यवीर आर्य ने कहा स्वामी श्रद्धानन्द पहले संन्यासी थे जिन्होंने दिल्ली के जामा मस्ज़िद के मिम्बर से वेद मंत्रों द्वारा अपना व्याख्यान आरम्भ कर हिन्दू मुस्लिम एकता का उदाहरण प्रस्तुत किया और स्वामी दयानन्द के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए शुद्धि आन्दोलन को बड़े जोर-शोर से चलाकर बिछड़े भाईयों को गले लगाया।

इस अवसर पर आर्य समाज खेड़ा अफगान के प्रधान श्री आदित्य प्रकाश गुप्त ने नौंवी बार अपने आर्य समाज द्वारा कराई गई वैदिक संस्कृति ज्ञान वाहिनी प्रतियोगिता का आयोजन कराकर उसका परिणाम व पारितोषिक एवं वैदिक साहित्य सभी आगन्तुक अध्यापकों, विद्यार्थियों को प्रदान किया इसी के साथ हर वर्ष की भांति छपने वाला कैलेण्डर वितरित किया। इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार नकद 2100/- रुपये अरूण कुमार व द्वितीय पुरस्कार नकद 1100/- रुपये राखी चौधरी व जसमीत कौर तृतीय पुरस्कार नकद 500/- रुपये साहिबा अंसारी, गीता, अरशी, मानसी, शालू व तनु चतुर्थ पुरस्कार आकाश, विश्वजीत, अंजलि, शिवानी, शिवानी छोटनलाल को वितरित कर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। इस प्रतियोगिता में निकट के इण्टर कॉलेज के छात्र एवं छात्राओं ने 500 की संख्या में भाग लिया।

इस अवसर पर लगभग 100 अध्यापकों ने भाग लिया। अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री आदित्य प्रकाश गुप्ता ने सभी अध्यापकों, विद्यार्थियों एवं क्षेत्रवासियों को वैदिक साहित्य का स्वाध्याय कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने को प्रेरित किया। सभी क्षेत्रवासियों, ग्रामवासियों, प्रधानाचार्यों, शिक्षकों का सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया और सभी बच्चों को अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का आशीर्वाद देकर उनका उत्साहवर्द्धन किया। अन्त में सभी आगन्तुकों ने भोजन ग्रहण किया।

इस अवसर पर श्री चन्द्रशेखर मित्तर नकुड़ से व रघुनाथ सिंह चौहान अम्बैहटा से, धर्मवीर जी नकुड़ से, राजपाल, कुलवन्त सिंह, शशिकान्त गुप्ता, सुरेन्द्र, कंवरपाल सिंह, मास्टर अशोक, यशपाल, राजेश, संदीप, संजय आर्य टौली, वेद भूषण, डॉ. अशोक, सोनू, जसबीर आदि ने कार्यक्रम में सहयोग दिया।

- अमित कुमार आर्य, मंत्री आर्य समाज

आर्य समाज, बी. एन. पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली-110088 को पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज, बी. एन. पूर्वी शॉलीमार बाग दिल्ली हेतु विवाहित, योग्य पुरोहित की शीघ्र आवश्यकता है। आवास की व्यवस्था, दक्षिणा योग्यतानुसार आवेदन या सम्पर्क करें।

- नरेन्द्र अरोरा, मंत्री, मो.:-9312595700

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 9–10 जनवरी, 2015
प्रकाशन की तिथि : 8 जनवरी, 2015
वैदिक सार्वदेशिक
8 से 14 जनवरी, 2015
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

प्रभु की शरण में यश और सुख

पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन् अमृक्तम्।
नामानि चित् दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त सन्दृष्टौ।।

– ऋ. ६/१/४

ऋषिः– भारद्वाजो बार्हस्पत्यः।। देवता–अग्निः।। छन्दः–निचृत्त्रिष्टुप्।।

विनयः- हे देव! हमने तुम्हारे पद के, तुम्हारे प्राप्तव्य-स्वरूप के, तुम्हारे चरणों के दर्शन पाये हैं, तुम्हें बार-बार नमस्कार करते हुए, तुम्हारी स्तुति करते हुए, तुम्हारे आगे झुकते हुए, भक्तिभाव से आत्म-समर्पण करते हुए ही हमें तुम्हारे दुर्लभ पद के दर्शन मिले हैं। यह सब तुम्हारी भक्ति की महिमा है। इसके साथ ही मेरी पुरानी यश पाने की इच्छा भी तृप्त हो गई है। तुम्हारी कृपा से ऐसा यश मिला है कि जो कि मृदित नहीं हो सकता। बाहर के मनुष्यों से मिलने वाला यश तो उनके अधीन होता है, वह मृदित होता रहता है, परन्तु तुम्हारे पद-दर्शन से जो अन्दर का यश मिला है वह अक्षय है, उसे पाकर अब मुझे किसी वाह्य यश की आकांक्षा नहीं रही है। तेरे सेवकों को संसार में सज्जन पुरुषों द्वारा भी बहुत सा यश मिला करता है, पर वह भी तुझ द्वारा मिले इस आन्तर यश की ही छाया होती है। हे अग्निदेव! तेरी भक्ति ने मुझे उबार दिया हैं तेरी भक्ति का तो इतना प्रताप है कि यदि कोई तेरे यज्ञार्ह (यज्ञ में उच्चारणीय) पवित्र पुण्य नामों को ही केवल धारण करे, उन्हें वाणी से बोलता हुआ भक्ति से हृदय में गुँजाता रहे, तो इस नाम-जपन, नाम-धारण से ही उसका अन्तःकरण इतना शुद्ध हो जाएगा कि उस पर तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि हो जाएगी। तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि में रहता हुआ वह सुख से आगे बढ़ता जाएगा, उसके व्याधि, स्त्यान आदि विघ्न हरण होते जाएंगे, वह निर्विघ्न सुख से उन्नत होता जाएगा।

तो क्या, हे अग्ने। हम तेरे पवित्र नामों को भी धारण न कर सकेंगे? यह तो कम से कम है जो हमें तुम्हारी ओर पहुँचने के लिए करना चाहिए। हमें तो तुम्हारे प्रेम के मार्ग में अन्त तक जाना है और एक दिन यह कह सकने का योग्य होना है "हमने तेरे पद के दर्शन पा लिए हैं और अनश्वर यश के भागी हो गये हैं।"

शब्दार्थः- श्रवस्यवः= यश की इच्छावाले हमने देवस्य=तुझदेव के पदम्=प्राप्तव्य स्वरूप को नमसा व्यन्तेः=नमस्कार द्वारा देखते हुए अमृक्तम्=नृदित होने वाले श्रवः=यश को आपन्=प्राप्त किया है। जो लोग यज्ञियानि=यज्ञार्ह नामानि चित्=नामों को ही दधिरे=धारण करते हैं वे भी ते भद्रायां सन्दृष्टौ=तेरी कल्याणमयी दृष्टि में रणयन्त=रहते हुए सुख पाते है।।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाए –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक सतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।